International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 4.271 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

राजस्थान में मौर्य साम्राज्य का विस्तार

Kusum Rathore

Lecturer in History, Govt. College, Sirohi, Rajasthan, India

सार

मौर्यकाल में लगभग पूरा राजस्थान मौर्यों के अधीन था। चंद्रगुप्त मौर्य के समय से ही मौर्यों की सत्ता इस क्षेत्र में फैल गयी। कोटा जिले के कणसवा गाँव से मिले शिलालेख से यह पता चलता है कि वहाँ मौर्य वंश के राजा 'धवल' का राज्य था।

परिचय

- नन्द वंश के पतन के पश्चात् मगध में मौर्य वंश का राज्य 321 ई.पू. स्थापित हुआ। चन्द्रगुप्त मौर्य ने पाटलिपुत्र के सिंहासन पर बैठने के पश्चात सम्पूर्ण आर्यावर्त पर विजय प्राप्त की जिसमें सुदूर पश्चिम तथा पूर्व के प्राप्त सम्मिलित थे। पश्चिम अप्रान्त में सुराष्ट्र प्रान्त चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में सम्मिलित होने का प्रमाण रुद्रदामा के गिरनार अभिलेख में मिलता है।

- विन्ध्य के कुछ प्रदेश भी चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में सम्मिलित थे। सिकन्दर के स्वदेश लौट जाने के बाद पंजाब पर भी चन्द्रगुप्त मौर्य का अधिकार हो गया था। यूनानी लेखक प्लुटार्क और जस्टिन ने उल्लेख किया है कि चन्द्रगुप्त ने 6 लाख सैनिक लेकर सारे भारत पर अपना अधिकार कर लिया। **महावंस में तो चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्पूर्ण जम्बू-द्वीप का स्वामी कहा गया है ।[1,2]**

- चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल में सिकन्दर का सेनापति सैल्यूकस निकेटर हुआ। उसने 305) ई. पू. भारत पर आक्रमण किया। किन्तु उत्तरापथ में मौर्य सेनाओं की सशक्त स्थिति देखकर सैल्यूकस को छोटे-मोटे युद्ध के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य से सन्धि करनी पड़ी। इस सन्धि के अनुसार सैल्यूकस द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य को हेरात, कन्धार, काबुल और बलूचिस्तान देने पड़े। **उसने अपनी पुत्री हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया, उपहार स्वरूप चन्द्रगुप्त ने उसे** 500 **हाथी प्रदान लिये।** इसके बाद दूत विनिमय भी हुआ । मेगस्थनीज सैल्यूकस के दूत के रूप में पाटलिपुत्र में रहने लगा। इससे चन्द्रगुप्त मौर्य की पश्चिमोत्तर सीमा हिन्दुकुश तक पहुँच गई ।

- **चन्द्रगुप्त मौर्य के समय साम्राज्य सीमा पश्चिमोत्तर में हिन्दुकुश से दक्षिण पूर्व में बंगाल की खाड़ी और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक थी, परन्तु इसमें कश्मीर, कलिंग और दक्षिण के कुछ भाग सम्मिलित न थे ।** साम्राज्य के कुछ भाग ऐसे थे जिन्हे आन्तरिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी । इनमें कुछ जीते हुए गणतन्त्र पश्चिमोत्तर में यवन, कम्बोज, दक्षिण पश्चिम सुराष्ट्र तथा महाराष्ट्र के आसपास की जातियों को आन्तरिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी ।

चन्द्रगुप्त मौर्य का राजस्थान पर आधिपत्य
चन्द्रगुप्त मौर्य का राजस्थान पर आधिपत्य था जिसकी पुष्टि निम्न प्रमाणों के आधार पर की जा सकती है

1. प्लुटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने छः लाख सैनिकों की सेना लेकर सम्पूर्ण भारत पर विजय प्राप्त की थी ।[3,4]

2. वैराट से अशोक का अभिलेख प्राप्त हुआ है। हम जानते हैं कि अशोक ने केवल कलिंग पर ही विजय प्राप्त की थी, इसलिये मत्स्य प्रदेश (वैराट) पर विजय प्राप्त करने का श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य को दिया जा सकता है ।

3. महावंस में चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्पूर्ण जम्बू द्वीप का स्वामी कहा गया है जिसमें राजस्थान का प्रदेश भी सम्मिलित था ।

4. 7 वी शताब्दी के प्रारम्भ में किसी मौर्य शासक का दक्षिण-पश्चिम राजस्थान तथा पूर्वी मालवा पर अधिकार था। **चित्रांग नामक मौर्य राजा ने चित्तौड़ दुर्ग का निर्माण करवाया था।**

- **डा. दशरथ शर्मा ने भी चित्तौड़ पर मौर्यों के शासन की पुष्टि करते हुए लिखा है** कि चौहान नरेश **सम्भरीश ने जब मेवाड पर आक्रमण किया तब चित्तौड़ पर मौर्य शासक शासन कर रहा था** यद्यपि चित्तौड़ पर चौहान आक्रमण होना विवाद का विषय है। सम्भवतः चित्तौड़ पर शासन करने वाला चित्रांग साम्राज्यिक मौर्या का ही कोई वंशज था

- **डी. सी. शुक्ल का मत है कि मौर्यकाल में राजस्थान** के आसपास के क्षेत्र उत्तर प्रदेश, सिन्ध, गुजरात और मालवा पर मगध साम्राज्य का अधिकार था। ऐसी परिस्थिति में यह सम्भव नहीं था कि यह प्रदेश मौर्य साम्राज्य से बाहर रहकर अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग करता रहे ।

राजस्थान पर अधिकार करने वाला प्रथम मौर्य शासक कौनसा था?

- अब प्रश्न उठता है कि राजस्थान पर अधिकार करने वाला प्रथम मौर्य शासक कौनसा था? हमें जो प्रमाण उपलब्ध होते हैं उनसे संकेतित है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने ही पहली बार राजस्थान पर अधिकार किया था । [5,6]
- इसका प्रमाण यह है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी साम्राज्य की सीमा का विस् सौराष्ट्र तथा काठियाबाड़ तक किया था जिसकी पुष्टि **रुद्रदामा के जूनागढ़ अभिलेख से होती है जिसमें चन्द्रगुप्त के राष्ट्रीय वैश्य पुष्यगुप्त द्वारा सुदर्शन झील के निर्माण का विवरण मिलता है।**
- हेमचन्द्र रायचौधरी का मत है कि अवन्ति पर मौर्यो का पूरा प्रभाव था इसलिये इस बात की सम्भावना है कि चन्द्रगुप्त मौर्य जिसका साम्राज्य अवन्ति तथा सुराष्ट्र में फैला हुआ था उसने राजस्थान पर भी अवश्य अधिकार किया होगा ।

चन्द्रगुप्त मौर्य के निधन के बाद

- चन्द्रगुप्त मौर्य के निधन (297 या 300 ई.पू.) के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी बिन्दुसार बना यूनानी लेखकों ने उसे अमिट्रोचेटि या अमित्रघाती (शत्रुओं का संहार करने वाला) कहकर पुकारा है ।
- उसने चन्द्रगुप्त मौर्य से प्राप्त साम्राज्य को सुरक्षित बनाये रखा। सीरिया के शासक एण्टिओकस सोटर ने अपने डिमैक्स को और मिश्र के सम्राट टालमी फिलाडेल्फस ने डायोनिसिअस को उसके दरबार में राजदूत बनाकर भेजा।
- बिन्दुसार ने 25 वर्ष तक राज्य किया था । तारानाथ के अनुसार बिन्दुसार और चाणक्य ने लगभग 16 नगरों को नष्ट किया और पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्रों के बीच के सारे प्रदेशों को अपने आधिपत्य में ले लिया । सम्भवतः दक्षिण भारत पर विजय उसी ने की थी प्रो. श्रीराम गोयल इस मत से सहमत नहीं है।
- बिन्दुसार के समय तक्षशिला में विद्रोह हुआ था जिसे अशोक ने दबाया। **अशोक ने तक्षशिला के विद्रोह को दबाकर खसों के प्रदेश पर भी अधिकार कर लिया था।** खसों का कश्मीर में राज्य था । लेकिन बिन्दुसार के राज्यकाल में कश्मीर पर विजय की गई। इस मत को प्रायः स्वीकार नहीं किया जाता ।

जहाँ तक राजस्थान का प्रश्न है बह बिन्दुसार के राज्यकाल में भी मौर्य साम्राज्य का अंग बना रहा ।

अशोक (273 ई.पू.) और राजस्थान

- बिन्दुसार की मृत्यु के पश्चात् अशोक (273 ई.पू.) चार वर्ष बाद मगध का सम्राट बना । उसने अपने पितामह और पिता से प्राप्त साम्राज्य को अखंड बनाये रखा । अभिलेखों से जात होता है कि अशोक ने अपने राज्यकाल में कलिंग को जीतकर उसे मौर्य साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया था ।
- राजस्थान चन्द्रगुप्त मौर्य के समय से ही मगध साम्राज्य का अंग बनकर देश की मुख्य धारा में समिलित हो गया था। बिन्दुसार के समय भी यही स्थिति बनी रही। अशोक के समय राजस्थान बौद्ध धर्म की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया जिसकी पुष्टि जयपुर के निकट बैराट नामक स्थल से प्राप्त अशोक के भाब्रू अभिलेख से होती है जो अब कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है ।[7,8]

सम्राट अशोक और बौद्ध साहित्य

- अशोक ने एक राजा के रूप में बौद्ध साहित्य के प्रचार में रुचि ली थी। इस विषय में उसके भाब्रु पाषाण शिला फलक लेख का साक्ष्य इस प्रकार है:- " मगध के राजा प्रियदर्शी ने संघ को अभिवादन करके कहा- (मैं आपके) स्वास्थ्य और सुखविहार की कामना करता हूँ) आप लोगों को विदित है (की) बुद्ध, धम्म और संघ में मेरी कितनी श्रद्धा और अनुरक्ति है। भदन्तो । जो कुछ भी भगवान बुद्ध द्वारा भाषित है वह सब सुभाशित है। किन्तु भदन्तो जो कुछ मुझे दिखाई देता है (अर्थात् प्रतीत होता है) कि धर्म चिरस्थायी होगा योग्य हूँ मैं उसे कहने को (अर्थात् उसे कहना, उसकी घोषणा करना मेरा कर्त्तव्य है।
- **भदन्तो! ये धर्म पर्याय है**- विनय समुकस, अलयवसानि अनागत भयानि मुनिगाथा मोनेयसुत उपतिसपसिन तथा लाधुलोवाद में मुशावाद का विवेचन करते हुए भगवान् बुद्ध द्वारा जो कुछ कहा गया है । भदन्तो। मैं चाहता हूँ क्या? कि इन धर्म पर्यायों को बहुसंख्यक भिक्षुपाद व भिक्षुणियाँ प्रतिक्षण सुने और उन पर मनन करें। इसी प्रकार उपासक और उपासिकाएँ भी। भदन्तो! इसी प्रयोजन के लिये इसे लिखवाता हूँ कि लोग मेरे अभिप्राय को जान लें।" इस विवरण से स्पष्ट है कि बौद्ध धर्मावलम्बी अशोक ने लोगों से प्रार्थना की कि वे विनय समुत्कर्ष आर्यवंशाः अनागत भयानि मुनिगाथा, मोनेय सूत्रम उप्पलिव्य के प्रश्न तथा राहु लवाद आदि ग्रन्थो का अध्ययन करें ।

बैराट स्थित बीजक की पहाड़ी से प्राप्त बौद्ध अबशेष

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 4.271 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

- **बैराट से** 1837 **ई. में कैप्टन बर्ट को भाब्रु अभिलेख मिला था।** इसके पश्चात् कार्लाइल (1871 -72) कनिंघम (1864-65) और डी. आर. भण्डारकर ने इस क्षेत्र का अध्ययन किया था।
- अशोक ने बैराट को अति महत्त्वपूर्ण स्थान मानते हुए यहाँ पर शिलालेख उत्कीर्ण करवाया तथा बौद्ध स्तूप, गुहागृह, सौर वक गृह का निर्माण करवाया।
- अशोक ने बौद्ध स्तूप में बुद्ध के अस्थि अवशेष भी स्थापित करवाये । वर्तमान में बीजक की पहाड़ी पर केवल मौर्यकालीन अवशेष ही बचे हैं जो अपने स्वर्णिम अतीत की कहानी कहते हुए प्रतीत होते हैं। [9,10]
- महावीर प्रसाद शर्मा ने तोरावटी का इतिहास में लिखा है कि **बैराट चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म स्थान था लेकिन बौद्ध ग्रन्थों से इस मत की पुष्टि नहीं होती है।** बीजक की पहाड़ी पर जो बौद्ध मन्दिर या स्तूप के अवशेष मिलते हैं वे मौर्यकालीन है।
- पहाड़ी पर प्लेट फार्म की लम्बाई चौड़ाई 60-70 मीटर है। इस मैदान के बीच में गोलाकार परिक्रमा युक्त ईटों का मन्दिर दृष्टिगोचर होता है । मन्दिर के गोलाकार भीतरी द्वार पर इस समय 27 लकड़ी के खम्भे लगने के स्थान स्पष्ट दिखलाई देते हैं। यहाँ से प्राप्त ईटों पर बुद्ध उपदेशों के अक्षर दृष्टिगोचर होते हैं।
- गोलाकार मन्दिर या बौद्ध स्तूप आयताकार चारदीवारी से घिरा हुआ है। यह दीवार 12 इंच मोटी ईटों से बनी है । इसके अन्दर का क्षेत्र 70 फीट उत्तर से दक्षिण तक लम्बा एवं 44 फीट 6 इंच पूर्व से पश्चिम को चौडा है ।
- इन दीवारों में जिन ईटों का प्रयोग किया गया है उनकी माप 20" x 10.5" x 3" है इस प्लेटफार्म पर भिक्षु-भिक्षुणीयों के श्रवण-मनन करने हेतु श्रावक गृह के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। बार-बार उत्खनन करने से इसका मूल स्वरूप विलुप्त हो गया है।
- इसके अलावा बहुत बड़ा समतल मैदान बना हुआ है। इस मैदान के सामने पश्चिम की तरफ ऊँचाई पर एक छोटा प्लेट फार्म या चबूतरा बना है। जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ कोई पूजनीय वस्तु रखी गई थी। जिसको लक्ष्य कर साधक उपासना करते थे।
- इस बौद्ध स्तूप या मन्दिर को देखने से ऐसा लगता है कि इसकी कई बार मरम्मत की गई थी, परन्तु इसके मूल ढाँचे को नहीं बदला गया। यह ढाँचा चूने के बजाय गारे तथा मिट्टी से बनाया गया है तथा उस पर चूने का प्लास्टर किया हुआ है। डॉ. दयाराम साहनी ने इस स्थल का सर्वेक्षण कार्य किया था ।
- पहाड़ी के नीचे भिक्षु-भिक्षुणियों के निवासगृह के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं जिनकी संख्या 25 हैं। पूर्व की तरफ 12 कोठरियाँ स्पष्ट दिखलाई देती हँ इनमें से 6 बड़े और 6 छोटे आकार की हैं । ये तीन समानान्तर कतारों में बनी हुई थी तथा परस्पर एक बरामदे से जुडी हुई थी ।
- **चीनी यात्री युवान-च्वांग ने यहाँ पर बौद्ध विहार होने की सम्भावना प्रकट की थी।** पहाड़ी पर दो गुफाएँ भी देखी जा सकती हैं। पुराविद् आर. सी. अग्रवाल का मत है कि ढूँढने पर **बीजक पहाड़ी क्षेत्र में अशोक के कुल** 8 **अभिलेख मिलने की सम्भावना है।** दो अभिलेख तो प्राप्त हो चुके हैं।
- **विराटनगर में भीमसेन की डूंगरी से भी अशोक का अभिलेख मिला है, इसे कार्लाइल ने** 1871-72 **ई. में खोज निकाला था ।** कनिंघम ने इसे पढ़कर विचार प्रकट किया कि यह अशोक का पूरा लेख है जो पाली भाषा में लिखा हुआ था । [11,12]
- इस लेख में कहा गया है कि देवताओं के प्रिय इस प्रकार कहते हैं ढाई वर्ष से अधिक हुए जब मैं उपासक हुआ पर मैंने उद्योग नहीं किया परन्तु एक वर्ष से अधिक हुए जब मैं संघ में आया हूँ तब से मैंने अच्छी तरह उद्योग किया है.....।
- **बीजक की पहाड़ी से अशोक स्तम्भ के** 100 **पालिश युक्त चुनार पत्थर के टुकड़े मिले हैं** । दयाराम साहनी का मत है कि यहाँ पर दो अशोक स्तम्भ थे।
- **बीजक की पहाड़ी से कुछ पंचमाकं मुद्राएँ भी मिली हैं ।** यहाँ से मिट्टी के बर्तन, मिट्टी की मूर्तियाँ, तश्तरियाँ, थालियाँ आदि प्राप्त हुई हैं। जिससे अब यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बैराट मौर्यकालीन धर्म एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण केन्द्र था ।
- अशोक के निधन (236 ई.पू) के बाद मौर्य साम्राज्य का विघटन प्रारम्भ हो गया

विचार-विमर्श

मौर्य काल (Maurya Empire / Maurya Period)- राजस्थान का प्राचीन इतिहास

- राजस्थान में अशोक के अभिलेख बैराठ (जयपुर) से मिलते हैं।
- बैराठ जयपुर में स्थित जगह का नाम है।

बैराठ, जयपुर (Bairath, Jaipur)-

- स्थित (Located)- बैराठ राजस्थान के जयपुर जिले में स्थित है।
- उत्खननकर्ता-
- (I) दयाराम सहानी (Dayaram Sahani)- (1936 में उत्खनन करवाया)
- (II) नील रत्न बनर्जी (Nil Ratan Banarjee)- (1962-63 में उत्खनन करवाया)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 4.271 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

- (III) कैलाश नाथ दीक्षित (Kailash Nath Dixit)- (1962-63 में उत्खनन करवाया)

- उत्खनन में मिले साक्ष्य (Evidence found in excavation)-
- (I) बैराठ से शैल चित्र (Rock Paintings) प्राप्त होते हैं।
- (II) बैराठ से 28 इंडो-ग्रीक सिक्के प्राप्त होते हैं जिसमें से 16 सिक्के मिनांडर के है।
- विशेषताएं-
- बैराठ की लिपि को शंख लिपि (Shell Script) कहा जाता है।
- जयपुर महाराजा रामसिंह-2 के शासन काल में बैराठ का उत्खनन करवाया गया।
- महाराजा रामसिंह-2 के समय बैराठ सभ्यता से सोने की एक संदुक प्राप्त हुई
- सोने की इस संदुक में शायद भगवान बुद्ध के अवशेष रहे होंगे।
- बैराठ में महादेव पहाड़ी तथा भोमली पहाड़ी का उत्खनन किया गया था।
- बैराठ से अशोक के दो अभिलेख प्राप्त होते हैं।[10,11]
- (I) बीजक की पहाड़ी का अभिलेख
- (II) भीम पहाड़ी का अभिलेख

(I) बीजक की पहाड़ी का अभिलेख-

- 1837 ई. में कैप्टन बर्ट (Captain Burt) को बीजक की पहाड़ी से यह अभिलेख प्राप्त हुआ
- बीजक की पहाड़ी के अभिलेख को भाब्रू अभिलेख (Bhabru Inscription) भी कहा जाता है।
- बीजक की पहाड़ी के अभिलेख में अशोक को मगध का राजा कहा गया है।
- बीजक की पहाड़ी अभिलेख में अशोक बुद्ध, संघ तथा धम्म में विश्वास व्यक्त करता है।
- बीजक की पहाड़ी का अभिलेख 7 बुद्ध पुस्तकों या 7 बौद्ध ग्रंथों की जानकारी देता है।

(II) भीम पहाड़ी का अभिलेख-

- 1871 ई. में ए.सी.एल. कार्लाइल (Archibald Campbell Carlyle) को भीम पहाड़ी से अशोक का यह अभिलेख प्राप्त हुआ।

ह्वेनसांग (Haen-sang)-

- ह्वेनसांग (Hiuen Sang) ने बैराठ की यात्रा की थी।
- ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक में बैराठ को 'पी लो यो तो लो' (Pi Lo Yo To Lo) कहा था।
- ह्वेनसांग के अनुसार बैराठ में 8 बौद्ध मठ (Monastery) थे। जिन्हें हूण राजा मिहिरकुल (Mihirkul) ने तोड़ दिया था।
- ह्वेनसांग ने बैराठ के बैल तथा भेड़ों को प्रसिद्ध बताया था।

मानसरोवर अभिलेख, चित्तौड़गढ़ (Mansarovar Inscription, Chittorgarh)- 713 ई.

- मानसरोवर अभिलेख राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के मानसरोवर से प्राप्त हुआ है।
- मानसरोवर अभिलेख 713 ई. का अभिलेख है।
- चित्तौड़गढ़ के मानसरोवर अभिलेख से 4 मौर्य राजाओं की जानकारी मिलती है। जैसे-
- (I) महेश्वर (Maheshwar)
- (II) भीम (Bhim)
- (III) भोज (Bhoj)
- (IV) मान (Man)

कणसवा शिवालय अभिलेख, कोटा- (Kansava Shivalay Inscription, Kota)- 738 ई.

- कणसवा शिवालय अभिलेख राजस्थान के कोटा जिले के कणसवा से प्राप्त हुआ है।[8,9]
- कोटा का कणसवा शिवालय अभिलेख 738 ई. का है।
- कणसवा शिवालय अभिलेख से मौर्य राजा धवल (Dhaval) की जानकारी मिलती है।
- कणसवा शिवालय अभिलेख मौर्यों की दी गई जानकारी राजस्थान में मौर्यों की अंतिम जानकारी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य (Other Important Facts)-

- राजस्थान में अशोक के अभिलेख बैराठ (जयपुर) से मिलते है।
- दो पहाड़ियों के दो अलग-अलग अभिलेख मिले है जैसे- बीजक की पहाड़ी, भीम पहाड़ी
- भाब्रू नामक गाँव बैराठ (जयपुर) के पास स्थित है।

- कैप्टन बर्ट बैराठ के बीजक की पहाड़ी के अभिलेख को काटकर भाब्रू ले गया तथा भाब्रू से कैप्टन बर्ट ने यह अभिलेख कलकत्ता भेज दिया तथा साथ ही एक पत्र लिखा जिसमें लिखा था की मै कैप्टन बर्ट इन दिनो भाब्रू में हूँ तथा भाब्रू से एक अभिलेख भेज रहा हूँ आप इसे पढ़ने का प्रयास कीजिए और जब कलकत्ता वालों ने यह पत्र पढ़ा तो उन्होने इस अभिलेख को भाब्रू का अभिलेख लिख दिया था इसीलिए बैराठ के बीजक की पहाड़ी के अभिलेख को भाब्रू का अभिलेख कहा जाता है।
- भारत में अशोक के 8 जगहों से अभिलेख या शिलालेख (पत्थर) मिले है जिनमें प्रत्येक पत्थर पर 14 अभिलेख या 14 लाइन (Point) है। अर्थात् भारत में अशोक के 14 अभिलेख प्राप्त हुए है जो 8 जगहों से प्राप्त हुए है।

परिणाम

पुरातात्विक साक्ष्य इंगित करते हैं कि प्रारंभिक मानव लगभग 100,000 साल पहले बनास नदी और उसकी सहायक नदियों के किनारे रहते थे । सिन्धु (_हड़प्पा) और सिंधु के बाद की सभ्यता (तीसरी-दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व) का पता लगाया जा सकता हैउत्तरी राजस्थान में कालीबंगन , साथ ही दक्षिण में उदयपुर शहर के पास आहर और गिलुंड में। कालीबंगन में मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े 2700 ईसा पूर्व के हैं । खोज निकटबैराट (उत्तर-मध्य राजस्थान में) तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दो शिलालेखों से संकेत मिलता है कि यह क्षेत्र उस समय भारत के मौर्य वंश के अंतिम महान सम्राट अशोक के शासन के अधीन था । वर्तमान राजस्थान के संपूर्ण या कुछ हिस्सों पर ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में बैक्ट्रियन (इंडो-ग्रीक) राजाओं[6,7] , दूसरी से चौथी शताब्दी तक शक क्षत्रपों (सीथियन) और चौथी शताब्दी के प्रारंभ से लेकर अंत तक गुप्त वंश का शासन था। छठी शताब्दी, छठी शताब्दी में हेफ्थलाइट्स (हूण) और एक राजपूत हर्ष (हर्षवर्धन)शासक, 7वीं सदी की शुरुआत में।

अनेक7वीं और 11वीं शताब्दी के बीच राजपूत राजवंशों का उदय हुआ, जिनमें गुर्जर-प्रतिहार भी शामिल थे, जिन्होंने सिंध क्षेत्र (अब दक्षिणपूर्वी पाकिस्तान में) के अरब आक्रमणकारियों को दूर रखा। अंतर्गतभोज प्रथम (या मिहिरा भोज; 836-885), गुर्जर-प्रतिहारों का क्षेत्र हिमालय की तलहटी से लेकर दक्षिण की ओर नर्मदा नदी तक और निचली गंगा (गंगा) नदी घाटी से लेकर पश्चिम की ओर सिंध तक फैला हुआ था। 10वीं शताब्दी के अंत तक उस साम्राज्य के विघटन के साथ, कई प्रतिद्वंद्वी राजपूत वंश राजस्थान में सत्ता में आ गए। प्रतिहारों के सामंत गुहिलों ने 940 में अपनी स्वतंत्रता का दावा किया और मेवाड़ (वर्तमान उदयपुर) के आसपास के क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया। 11वीं शताब्दी तक चौहान (चाहमान), जिनकी राजधानी अजमेर और बाद में दिल्ली थी, पूर्वी क्षेत्र में प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा था। निम्नलिखित शताब्दियों में अन्य कबीले-जैसे कछवाहा, भट्टी और राठौड़-क्षेत्र में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सफल रहे।

मुठभेड़ों की श्रृंखला का दूसरा भाग जिसे के नाम से जाना जाता है1192 में दिल्ली के पास लड़ी गई तरौरी (तराईन) की लड़ाई ने राजस्थान के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की।पृथ्वीराज तृतीय के अधीन राजपूत सेना पर मुहम्मद गौरी की जीत से न केवल भारत-गंगा के मैदान में राजपूत शक्ति का विनाश हुआ, बल्कि उत्तरी भारत में मुस्लिम उपस्थिति भी मजबूती से स्थापित हुई। जैसे ही मुस्लिम सेनाएं काठियावाड़ प्रायद्वीप (सौराष्ट्र; अब गुजरात राज्य का हिस्सा) के पारंपरिक मार्गों के साथ दक्षिण और फिर पश्चिम की ओर बढ़ीं), जो अब राजस्थान है, उसके राजपूत साम्राज्यों को घेर लिया गया। अगली चार शताब्दियों में दिल्ली स्थित केंद्रीय सत्ता द्वारा क्षेत्र के राजपूत राज्यों को अपने अधीन करने के प्रयास बार-बार किए गए, हालांकि असफल रहे। हालाँकि, समान ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं के बावजूद, राजपूत अपने विरोधियों को निर्णायक हार देने के लिए कभी एकजुट नहीं हो पाए।[5,6]

16वीं शताब्दी की शुरुआत में राजपूत ताकत अपने चरम पर पहुंच गईमेवाड़ के राणा सांगा (राणा संग्राम सिंह), लेकिन मुगल आक्रमणकारी द्वारा एक भीषण युद्ध में वे हार गये।बाबर , और एकजुट राजपूत राज्य व्यवस्था का संक्षिप्त वैभव तेजी से कम हो गया। यह काफी हद तक राजस्थान के इतिहास के उस काल से है कि राजपूतों का एक बहादुर योद्धा के रूप में रोमांटिक दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है।

16वीं शताब्दी के अंत में, मुगल सम्राटअकबर कूटनीति और सैन्य कार्रवाई के माध्यम से वह हासिल करने में सक्षम था, जो उसके पूर्ववर्ती अकेले बल के बल पर हासिल करने में असमर्थ थे। शाही मुगल सेनाओं द्वारा अभी भी सैन्य अभियान चलाए जा रहे थे, और रणथंभौर और चित्तौड़गढ़ (चितौड़) जैसे राजपूत गढ़ों को घेर लिया गया और नष्ट कर दिया गया (1567-68), लेकिन अकबर ने कई राजपूत शासक घरानों के साथ गठबंधन की एक श्रृंखला में प्रवेश किया, विवाह की व्यवस्था की। अपने लिए और अपने उत्तराधिकारियों के लिए राजपूत राजकुमारियों के साथ। अकबर के पुत्र और उत्तराधिकारी, जहाँगीर (शासनकाल 1605-27), साथ ही जहाँगीर के तीसरे पुत्र, आगरा (उत्तर प्रदेश) में ताज महल के निर्माता , शाहजहाँ(शासनकाल 1628-58), दोनों राजपूत माताओं से पैदा हुए थे। मुग़ल-राजपूत विवाह 18वीं सदी की शुरुआत तक जारी रहे, जिससे कई राजपूत राज्यों (उनके अपर्याप्त सैन्य संसाधनों के साथ) को महंगी सैन्य अधीनता के बिना साम्राज्य में शामिल कर लिया गया। इसके अलावा, कुछ राजपूत शासक, जैसेअंबर (जयपुर) के मान सिंह और मारवाड़ (जोधपुर) के जसवन्त सिंह ने शाही मुगल सेना में वफादारी और विशिष्टता के साथ

सेवा की। अकबर के अधीन क्षेत्र के राजपूत राज्यों को मुगल साम्राज्य की एक प्रशासनिक इकाई, अजमेर के सूबा के तहत एक साथ समूहीकृत किया गया था।

1707 में सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद , भरतपुर के राजपूत राज्य का विकास एक जाट (किसान जाति) विजेता द्वारा किया गया था , लेकिन 1803 तक आसपास के अधिकांश राज्यों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।पश्चिम-मध्य भारत के मराठा राजवंश। बाद में 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने मराठों को अपने अधीन कर लिया और क्षेत्र में सर्वोच्चता स्थापित करके राजपूत राज्यों को राजपूताना प्रांत में संगठित किया। राजपूताना में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व गवर्नर-जनरल के एजेंट की उपाधि वाले एक राजनीतिक अधिकारी द्वारा किया जाता था, जो अजमेर-मेरवाड़ा के छोटे ब्रिटिश प्रांत का मुख्य आयुक्त भी था। उसके अधीन निवासी और राजनीतिक एजेंट थे जो विभिन्न राज्यों से मान्यता प्राप्त थे।[4,5]

उसी काल में भारतीय राष्ट्रवाद के विचार का जन्म हुआ। उदयपुर में,दयानंद सरस्वती ने अपनी रचना लिखीसत्यार्थ प्रकाश ("सत्य का प्रकाश"); हिंदू धर्म को उसकी प्राचीन शुद्धता में पुनर्स्थापित करने के इरादे से किए गए इस कार्य ने राजपूताना में उत्साह पैदा कर दिया। जैन साधुओं और विद्वानों के बीच भी विचार के महत्वपूर्ण आंदोलन हुए ।अजमेर राजनीतिक गतिविधि का केंद्र था, और राष्ट्रवादी नेताओं में अर्जुन लाल सेठी, माणिक लाल वर्मा, गोपाल सिंह और जय नारायण व्यास शामिल थे।

1947 में भारत के स्वतंत्र होने के बाद, राजपूताना की रियासतों और सरदारों को चरणों में एक इकाई में एकीकृत किया गया। उन्हें पहले मत्स्य संघ और राजस्थान संघ जैसे छोटे संघों में बांटा गया था, जिन्हें 1949 में ग्रेटर राजस्थान बनाने के लिए शेष राजपूत राज्यों के साथ विलय कर दिया गया था। जब 1950 में भारत का नया संविधान लागू हुआ, तो राजस्थान राज्य बन गया भारत का अभिन्न अंग . राजपूत राजकुमारों ने-हालांकि अपनी मूल उपाधि, कुछ विशेष विशेषाधिकार और प्रिवी पर्स की मान्यता बरकरार रखते हुए-अपनी राजनीतिक शक्तियां केंद्र सरकार को सौंप दीं। जब राज्य पुनर्गठन अधिनियम लागू किया गया1956 में राजस्थान को वह स्वरूप प्राप्त हुआ जो आज है। पूर्व रियासतों के शासकों को दिया जाने वाला विशेषाधिकार 1970 में बंद कर दिया गया।

निष्कर्ष

इस बात पर कोई विवाद नहीं कि मौर्य साम्राज्य को चरम पर ले जाने का काम किया सम्राट अशोक ने। विवाद इसलिए नहीं क्योंकि अशोक के लिखवाए शिलालेखों में पुख्ता जानकारी है उस समय की। बौद्ध और जैन ग्रंथों ने इस इतिहास को और ज़्यादा विश्वसनीय बनाया। आज हमें पता है कि सम्राट अशोक का साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप में कहां तक फैला था। हम यह भी जान गए हैं कि अशोक की शासन नीतियां क्या थीं। लेकिन, एक बात हम आज भी नहीं जानते। एक रहस्य, जो अभी तक उजागर नहीं हुआ।[3,4]

संसार से अशोक के विदा होने के सिर्फ पांच दशक के भीतर कैसे नाश हो गया समूचे मौर्य वंश का अगर इतिहास सबक लेने की चीज़ है, तो इस महान राजवंश के नाश या पतन के कारणों को ज़रूर खोजा जाना चाहिए। इससे यह सबक मिलेगा कि क्या ग़लतियां होती हैं, जिससे इतने विशाल साम्राज्य तक ढह जाते हैं।

गौर से देखें तो प्राचीन इतिहास में भारत के सबसे बड़े भूभाग पर एकछत्र राज यानी अखंड भारत की पहली तस्वीर मौर्य काल में ही दिखाई देती है। ज्ञात इतिहास का पहला सबसे संपन्न राजवंश माना गया है मौर्य को। चंद्रगुप्त मौर्य ने इस साम्राज्य की नींव रखी और सम्राट अशोक ने उसे ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। मौर्य काल की संपन्नता का एक अनुमान यह लगाया गया है कि उस समय विश्व की जीडीपी में एक तिहाई हिस्सा मौर्य साम्राज्य का ही था। इस समय से तुलना करें, तो दुनिया के सबसे संपन्न देश अमेरिका की वैश्विक जीडीपी में हिस्सेदारी 24 फ़ीसदी है यानी एक चौथाई। माली हालत में दूसरे नंबर पर मौजूद है चीन और उसकी हिस्सेदारी है 17 प्रतिशत। आज के चीन से दोगुना अमीर था मौर्य शासन।

इस बात को ज़्यादा दोहराने की ज़रूरत नहीं कि प्राचीन भारत के जिस शासक को दुनियाभर में सबसे अधिक जाना-समझा गया वह चक्रवर्ती सम्राट अशोक ही थे। इतिहास उन्हें भारत का एक अपराजेय योद्धा सिद्ध करता है। ऐसा योद्धा, जिसने हर युद्ध पूरी ताकत से लड़ा और जीता। एक योद्धा राजकुमार के रूप में अशोक को उनके पिता सम्राट बिन्दुसार ने जहां भी राज्य विस्तार या विद्रोह दबाने के लिए भेजा, वह वहीं से सफल होकर लौटे।

अशोक के सम्राट बनने से पहले और सम्राट बनने के लिए जो भयानक रक्तपात हुआ, उसके किस्से इतिहास में दर्ज हैं। हालांकि इतिहास में वह घटना भी दर्ज है, जब अशोक का डंका चारों दिशाओं में बजने के बावजूद पूर्वी भारत के एक राज्य कलिंग ने घुटने टेकने से इनकार कर दिया था। यह वही राज्य था, जिसे चंद्रगुप्त मौर्य भी नहीं जीत पाए थे। अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई के आदेश दे दिए।[2,3]

कलिंग ताकत में छोटा ज़रूर था, लेकिन उसने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप बिना लड़े हार मानने से इनकार कर दिया। युद्ध हुआ और

राज्य की रक्षा के लिए कलिंग की सेना के साथ औरतें, बच्चे, बूढ़े, किसान, व्यापारी - सभी खड़े हो गए। अशोक की विशाल मौर्य सेना ने कलिंग को रौंद डाला। अनुमान है कि कोई डेढ़ लाख लोग लड़ते हुए मारे गए। इतनी भयावह मारकाट हुई कि बीसियों हज़ार घायल युद्ध के बाद मर गए। कहते हैं कि ऐसी भयानक हिंसा के दृश्यों ने अशोक को विचलित कर दिया। इतिहास का यह वही मोड़ था, जब युद्धप्रिय अशोक हिंसा छोड़ धर्म की शरण में चले गए। बौद्ध धर्म अपना लिया।

गौर इस बात पर भी किया जाना चाहिए कि कलिंग युद्ध अशोक के शासनकाल के आठवें साल में हुआ। इसके बाद अशोक ने 30 साल और राज किया। उन्होंने शस्त्र त्याग दिए थे, लेकिन तब भी उनके राज्य में कहीं विद्रोह नहीं हुआ। इसका एक कारण यह माना जाता है कि अशोक के शुरुआती दौर में विद्रोहों को कुचलने का उनका इतिहास इतना खौफनाक रहा था कि किसी में सर उठाने की हिम्मत नहीं थी।

कलिंग युद्ध के बाद अशोक अपना ज़्यादा समय धर्म के प्रचार-प्रसार में लगाने लगे। राजकोष से धर्म अनुष्ठानों के लिए खुले हाथ से दान दिया जाने लगा। धर्म के प्रसार के लिए अशोक ने जगह-जगह शिलालेख लगवाए। आज इन शिलालेखों से ही उस कालखंड को समझा गया और इन्हीं शिलालेखों के कारण सम्राट अशोक को याद किया जाता है।[1,2]

बहरहाल, कई इतिहासकारों को इस बात पर बड़ा अचरज होता है कि अशोक के शिलालेख पूरे साम्राज्य में जगह-जगह मिलते हैं, लेकिन कलिंग युद्ध की जानकारी देने वाला शिलालेख कलिंग में नहीं बल्कि शाहबाजगढ़ी में पाया गया। इस शिलालेख में यह जानकारी भी नहीं दी गई कि कलिंग किस भूभाग में था। ऐसा भी नहीं है कि अशोक ने कलिंग में शिलालेख लगवाए ना हों। अशोक ने वहां दो अलग शिलालेख लगवाए। एक धौली में और दूसरा जौगड़ा में, लेकिन दोनों में ही कलिंग युद्ध का कोई ज़िक्र नहीं। कलिंग के शिलालेखों में अशोक ने दूसरे राज्यों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार, वहां के नागरिकों का पूरा सम्मान करने जैसी बातें लिखवाईं। इसी आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि अशोक नहीं चाहते थे कलिंग की भावी पीढ़ियों के मन में उनकी छवि हिंसक और आक्रमणकारी शासक की बने। वह न्यायप्रिय और सहिष्णु राजा की छवि छोड़कर जाना चाहते थे। एक अरसे तक इतिहासकारों के लिए कलिंग एक अबूझ पहेली की तरह था। मौर्य साम्राज्य का अंत होने के दो हज़ार साल बाद यानी 19वीं सदी में जब अशोक के शिलालेख मिले, तब तक प्राचीन भारत के कलिंग का नाम बदल चुका था। कोई नहीं जानता था कि आज का ओडिशा ही प्राचीन काल का कलिंग था। इस पहेली का जवाब मिला कलिंग के एक राजा खारवेल के अभिलेख से।

कई पुरातात्विक खोजों के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि राजा खारवेल अशोक के निधन के 47 साल बाद कलिंग के राजा बने। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से यह भी पता चल गया कि अशोक ने जिस कलिंग से युद्ध किया, वह महामेघवाहन चेदिवंश का राज्य था। इसी अभिलेख से मौर्य वंश के अंत काल की तस्वीर और साफ़ हो गई।[9,10]

ईसापूर्व 232 में अशोक के निधन के बाद 6 मौर्य शासक हुए, लेकिन इन सभी का शासन सिर्फ 52 साल तक चल पाया। इसीलिए उन ऐतिहासिक तथ्यों की खोजबीन शुरू की गई कि इतने महान साम्राज्य का अंत अचानक इतनी जल्दी कैसे हो गया। वैसे तो इसके दर्जनभर कारणों की सूची बन चुकी है, लेकिन तीन बड़े कारणों की चर्चा ज़्यादा होती है।

मौर्यों के पतन का पहला बड़ा कारण यह बताया जाता है कि अशोक के उत्तराधिकारी कमजोर थे। इतने बड़े साम्राज्य और उसकी सेना को संभालने की क्षमता उनमें से किसी में नहीं थी। इसीलिए अशोक के बाद कई जगह विद्रोह पनपने लगे और साम्राज्य टूटता चला गया।

दूसरा कारण यह बताया जाता है कि ऐलानिया तौर पर सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म अपनाने से उनके विरोधियों में अशोक का भय कम होने लगा। अशोक के निधन के बाद तो यह खौफ बिल्कुल ही जाता रहा और बौद्ध धर्म से अलग धर्मों के योद्धा मौर्यों के ख़िलाफ़ एकजुट होने लगे।

पतन का तीसरा बड़ा कारण यह माना गया है कि अपनी धर्म नीति के कारण अशोक हद से ज़्यादा परोपकारी बन गए। वह खूब दान पुण्य करने लगे। उनका ध्यान सम्राज्य की अर्थव्यवस्था से हटता चला गया। सम्राट अशोक ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में सम्राज्य की माली हालत पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। अनुमान लगाया जाता है कि प्रशासन और सेना पर खर्च के लिए संसाधन कम पड़ने लगे। साम्राज्य कमजोर होने लगा। मौर्य वंश की संपन्नता अशोक के विदा होने के 50 साल बाद पूरी तौर पर चुक गई। आखिर में मौर्य राजवंश मिट ही गया। आखिरी मौर्य शासक बृहद्रथ को उन्ही के सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने मार डाला था।

मौर्यों के पतन का विश्लेषण करते हुए सवाल यह होना चाहिए कि मौर्य साम्राज्य के पतन में अशोक के उत्तराधिकारियों की क्या भूमिका रही, लेकिन समीक्षा इस बात की भी होती है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए अशोक कितने जिम्मेदार थे? दरअसल ऐतिहासिक तथ्यों को पढ़ना एक बात है, लेकिन कई बार उनका विश्लेषण बिल्कुल अलग बात हो जाती है, ख़ासतौर पर अशोक के मामले में तो शौकिया विद्वानों के विश्लेषण बड़ी दुविधा में डाल देते हैं।[12]

किसी सम्राट के धर्म की शरण में जाने को अगर उस साम्राज्य के लिए एक जोखिम बताया जाएगा, तो यह बात नैतिक रूप से ठीक नहीं मानी जानी चाहिए। लेकिन, राजव्यवस्था के लिहाज से देखें तो एक सबक यह भी बनता है कि सत्ता का केंद्रीकरण और किसी मत विशेष की तरफ शासक का अति झुकाव राज्य को कैसे कमजोर कर देता है। मौर्य वंश के अंत से कुछ और सबक भी बन सकते हैं। मसलन, किसी राजव्यवस्था को बनाए रखने के लिए टिकाऊ शासन प्रणाली का होना भी उतना ही ज़रूरी है।[11,12]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Smith, Vincent Arthur (1920), The Oxford History of India: From the Earliest Times to the End of 1911, Clarendon Press, पपृ॰ 104–106, मूल से 10 मई 2016 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 21 जून 2016
2. ↑ Majumdar, R. C.; Raychaudhuri, H. C.; Datta, Kalikinkar (1950), An Advanced History of India (Second संस्करण), Macmillan & Company, पृ॰ 104, मूल से 10 मई 2016 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 21 जून 2016
3. ↑ Avari, Burjor (2007). India, the Ancient Past: A History of the Indian Sub-continent from C. 7000 BC to AD 1200 Archived 2016-05-11 at the Wayback Machine Taylor & Francis. ISBN 0415356156. pp. 188-189.
4. ↑ Taagepera, Rein (1979). "Size and Duration of Empires: Growth-Decline Curves, 600 B.C. to 600 A.D.". Social Science History. 3 (3/4): 132. JSTOR 1170959. डीओआइ:10.2307/1170959.
5. ↑ Turchin, Peter; Adams, Jonathan M.; Hall, Thomas D (दिसंबर 2006). "East-West Orientation of Historical Empires". Journal of World-Systems Research. 12 (2): 223. आइ॰एस॰एस॰एन॰ 1076-156X. मूल से 20 मई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 सितम्बर 2016.
6. ↑ Thanjan, Davis K. (2011). Pebbles (अंग्रेज़ी में). Bookstand Publishing. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9781589098176.
7. ↑ "The largest city in the world and other fabulous Mauryan facts". मूल से 17 जनवरी 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 जनवरी 2017.
8. ↑ Narain Singh Kalota (1978). India As Described By Megasthenes.
9. ↑ "The politics behind the caste census in Bihar".
10. ↑ "Destinations :: Patna". मूल से 2014-09-18 को पुरालेखित.
11. ↑ Mookerji 1988 Archived 2016-06-08 at the Wayback Machine, pp. 9–11.
12. ↑ Mookerji 1988 Archived 2016-06-08 at the Wayback Machine, pp. 9–11.